सारांश

परसवान गाँव की उराँव समुदाय की सभी महिलाओं को समाज में प्रचलित आदर्शों, विश्वासों, व्यवहारों, मान्यताओं, मूल्यों, नियमों इत्यादि के आधार पर ही स्थिति प्राप्त हैं। इस समाज में पारिवारिक संरचना के अंतगर्त आर्थिक क्रिया-कलापों में पुरुष से कहीं ज्यादा महिलाएं मेहनत मजदूरी करके अर्जित उपलब्धियों को भी अपनी इच्छा के अनुसार उपभोग नहीं कर पाती हैं। जबकि अन्य जनजातीय समुदायों में महिलाएं अधिक स्वतंत्र हैं। उराँव समाज में पारिवारिक सहयोग के बावजूद भी महिलाओं को परिश्रम करने वाली दासी, पत्नी, गृहणी और अबला के सिवाय कुछ नहीं समझा जाता है। विवाह के बाद महिलायें केवल पति की ही सम्पत्ति समझी जाती हैं और इसके साथ ही विवाहिता को पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा नहीं दिया जाता है। संपत्ति का अधिकार पिता से सीधे पुत्र को ही प्राप्त होता है। इस समाज की महिलायें काफ़ी मेहनती, कठिन परिश्रम करने वाली होती हैं तथा इनको गृह कार्य के अलावा खेतों, जंगलों, भवन निर्माण कार्यों, ईट भट्टा, खदानों व सड़क निर्माण आदि जगहों पर कार्यों में संलग्न देखा जा सकता है। इस प्रकार महिलाओं के अत्यधिक परिश्रमी होने के बावजूद भी समाजिक परम्पराओं, प्रचलित आदर्श मान्य मूल्यों और विश्वास के कारण इनकी धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक आधार पर परिवार की प्रधान जिम्मेदारी नहीं होती है। इस समाज की महिलाएं मजदूरी के साथ-साथ घर के कार्य व पारिवारिक उत्तरदायित्वों को सफलता पूर्वक सम्पादित करती हैं। स्त्रियाँ लड़की, पत्नी, माँ व बहू आदि के रूप में अपनी भूमिकाओं को निभाते हुए पारिवारिक सहयोग करती हैं।

उराँव समाज में आर्थिक आय का मुख्य स्त्रोत गैर कृषि मजदूरी के कार्यों से प्राप्त होता है। कृषि इस जनजाति में नाम मात्र होती है। कृषि कार्य में भी महिला की भूमिका अधिक होती है जैसे – फसल बुआई, रोपाई, मिजाई के साथ उसका निराकरण करना इत्यादि। इसके अतिरिक्त महिलाएं रोजी-रोटी की तलाश में फसल काटने के लिए प्रवासी के रूप में अपना जिला और राज्य छोड़कर किसी दूसरे राज्यों के में भी जाती हैं। मजदूरी कार्य करके पुन: वापस अपने मुख्य स्थान लौट कर आ जाती हैं जिससे भोजन के रूप में

खाने के लिए अनाज की व्यवस्था हो जाती है परन्तु बहुत ही कम आय के लिए इन्हें विस्थापन की समस्या से जूझना पड़ता है।

इस समाज की राजनीतिक स्थिति के संदर्भ में यह पाया गया कि उराँव समुदाय के लोगों में परम्परागत राजनीति के साथ पंचायती व्यवस्था पाई जाती है। परम्परागत राजनीति व्यवस्था में समाज के मुख्य तथा चुने गए पांच लोग प्रधान होते हैं, जिसे ये लोग "टोला" पंचायत कहते हैं, के अंतर्गत इनकी घरेलू और सामजिक झगड़ों का निराकरण किया जाता है। इस व्यवस्था में केवल पुरुष की ही भागीदारी होती है। महिला को इस व्यवस्था के योग्य नहीं समझा जाता है। महिलाओं को केवल अपनी बात रखने के लिए बुलाया जाता है।

उराँव जनजातीय महिलाओं में मातृत्व, स्वास्थ्य और परिवार नियोजन कार्यक्रम के सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी और चेतना नहीं है। इस समुदाय में जानकारी व सामाजिक चेतना का अभाव है। उराँव समुदाय की महिलाओं की सबसे बड़ी बात यह है कि लड़कियों का नाबालिक उम्र (कम उम्र) में ही विवाह करा दिया जाता है जिसके कारण इनका बौद्धिक, शारीरिक व मानसिक विकास विशेष रूप से पूर्ण नहीं हो पाता है। जिस आयु में लड़की को पढ़नी चाहिए उस आयु में वह माँ बन जाती है।

उराँव समुदाय के महिलाओं के अशिक्षित होने के अनेक कारण हैं। इस जनजाति की महिलाओं का कहना था कि उनके माता-पिता उन्हें शिक्षा इसलिए नहीं दिला पाए क्योंकि वे गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करते थे। महिलाओं में अज्ञानता होने के कारण ये लोग किसी भी कार्य को करने के लिए तैयार हो जाती हैं क्योंकि इनके पास आर्थिक समस्या ज्यादा रहती है। गैर मजदूरी के कार्य भी प्रतिदिन नहीं मिल पाते हैं इसके बावजूद भी अन्य कार्य करके महिलाएं पुरुष के अपेक्षा ज्यादा आय प्राप्त करती हैं। फिर भी पुरुष का आधिपत्य महिलाओं पर ही होता है क्योंकि पुरुष इनके द्वारा कमाए हुए पैसों को अपनी इच्छा अनुसार उपयोग करते हैं।

महिलाओं में शिक्षा का अभाव होने के कारण कानून संबंधी कोई जानकारी नहीं है जिससे वे अपने अधिकारों से अनिभिज्ञ हैं। इसी वजह से ये इन घरेलू हिंसा जैसे बाल अपराध, भ्रूण हत्या, बाल विवाह आदि अनेक अपराधों का शिकार बनती हैं। अशिक्षा इस समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है क्योंकि पुरुषों में भी शिक्षा के प्रति रुझान यदा-कदा ही देखने को मिलता है। जागरूकता का आभाव होने के कारण वे इन अधिकारों से वंचित रह गए हैं। जो महिलायें शिक्षित हैं उन्हें अपने अधिकारों और क़ानूनों का कुछ ज्ञान है जिससे वे अपने अधिकार को कायम रखे हुये हैं। घरेलू झगड़ो से अशिक्षित महिलाएं ज्यादा प्रभावित होती हैं जिसका कारण आर्थिक स्थिति, शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक पक्ष होता है। झगड़ा या मारपीट की स्थिति को समाज के बुजुर्ग व्यक्तियों के द्वारा सुलझा लिया जाता है।

उराँव समुदाय में जादू-टोने में बहुत विश्वास किया जाता है क्योंकि जब कोई बच्चा बीमार होता है तो उसका कारण बुरी शक्तियों का प्रभाव माना जाता है जिसका उपचार वैज्ञानिक चिकित्सा के बजाय झाड़-फूँक से किया जाता है। झाड़-फूँक की क्रिया के लिए बैगाओं (ओझा), तांत्रिक या दैवीय शक्तियों का सहारा लिया जाता है। बुरी शक्ति की प्रयोग करने वाले पुरुष को टोनहा और महिलाओं को टोनही के नाम से जाना जाता है जिसका नाम पता हो जाने पर समाज के लोगों द्वारा बैठक कर पंचो की मदद से दण्डित किया जाता है।

इस समाज में आधुनिकीकरण का प्रभाव बिलकुल निम्न पाया गया है जिसके कारण से ये लोग परम्परागत विचारों जैसे– खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, न्याय व्यवस्था, भाषा आदि का अनुकरण करते हुए अपनी वास्तविक जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। यह समाज अशिक्षित होने के कारण अधिक बदलाव नहीं कर पाया है जिसकी वजह से इनमें महिलाओं के प्रति ज्यादा भेदभाव अभी तक निहित है जिसका सहन महिला हमेशा से करती आ रही है और वर्तमान में भी कर रही है।

उराँव जनजाति में उत्सवों और त्यौहारों का बहुत बड़ा महत्व होता है जिसमें उनके सामाजिक और धार्मिक विचारधारा जुड़े होते हैं। इन त्यौहारों में पुरुष और महिला दोनों का अधिकार होता है लेकिन

कुछ रस्मों को केवल पुरुष ही पूरा करते हैं क्योंकि महिलाओं में मासिक धर्म की प्रवृत्ति पाई जाती है। उराँव जनजाति में सबसे बड़ा त्यौहार 'करमा' त्यौहार माना जाता है जिसमें इनके ईष्ट देव 'करमदेव' है जो कि 'करम' नामक वृक्ष में निवास करते हैं। इस वृक्ष का वनस्पतिक नाम रुबिआसी (Rubiaceae) है। इस त्यौहार को सितम्बर माह (भाद्रपद) में मनाया जाता है जिसका उद्देश्य फसल की सुरक्षा के लिए होता है।

उराँव समाज की संस्कृति गैर समाज की संस्कृति से विल्कुल भिन्न है क्योकि अपनी संस्कृति के माध्यम से ही मानव समाज ने प्राकृतिक रहस्यों को जाना पहचाना है। उराँव समाज के लोग अपनी परम्परा, संस्कारों, व्यवहारों, विचारों, नियम, विवाह, भाषा, रहन-सहन, खान-पान, नृत्य, वेशभूषा आदि को एक संस्कृति के रूप में अनुकरण करते आयें हैं। उराँव समाज के लोग संस्कृति को समाज एवं पूर्वज की आत्मा के रूप में देखते हैं क्योकि इसी के आधार पर सामाजिक जीवन एवं क्रिया-कलाप को ये लोग पहचानते हैं। ये क्रिया-कलाप ही इनकी जीवन की नींव डालते है जिनके आधार पर इनका परिवार और समाज निर्मित होता है।

प्रारंभ से ही इस समाज की महिलाएं अनजाने तौर पर सांस्कृतिक आचरण में बँध जाती हैं। चाहे वह गोदना हो या शादी-विवाह की रस्में, मृतकों का संस्कार हो या करमा का त्योहार- इन सबके साथ उराँव समाज की महिलाओं का सांस्कृतिक संबंध अटूट है।